St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (4)

Class- 10 पाठ - जांच अभी जारी है

Date: 06/05/2020

लेखिका परिचय

'जांच अभी जारी है' कहानी की लेखिका ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 में हुआ था। वह प्रमुख भारतीय लेखिका है वह कहानी नाटक उपन्यास निबंध और पत्रकारिता अर्थात साहित्य के लगभग सभी विधाओं में उन्होंने कार्य भार संभाला है। हिंदी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरंतर बनी हुई है। लगभग आधी साल के समयकाल में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विभाग विश्वविद्यालय की 'त्रैमासिक पत्रिका' हिंदी के संपादिका बनी हुई है।
दो खंडों में अब तक की पूरी कहानियां 'ममता कालिया की कहानियां' नाम से प्रकाशित हुई है। उनकी शुरुआती पांच कहानी संग्रह की कहानियां एक साथ प्रथम खंड में तथा दूसरे खंड में उनके चार कहानी संग्रह को शामिल किया गया है।

प्रमुख कृति:

कहानी संग्रह: छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नं. छ:, उनका यौवन, जांच अभी जारी है, प्रतिदिन, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लड़की।
उपन्यास: बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लड़कियां, एक पत्नी के नोट्स, दौड़, अंधेरे का ताला, दुक्खम- सुक्खम ।
कविता संग्रह: खाँटी घरेलू, औरत, कितने प्रश्न करूँ, नरक दर नरक, प्रेम कहानी।
नाटक संग्रह: यहां रहना मना है, आप न बदलेंगे।
संस्मरण: कितने शहरों में कितनी बार।
अनुवाद: मानवता के बंधन ।
संपादन: बीसवी सदी का हिंदी महिला- लेखन खंड 3।

सारांश

ममता कालिया द्वारा रचित 'जांच अभी जारी है' कहानी एक ऐसी लड़की की कहानी है जो महत्वाकांक्षी है। जिसका सपना एक आम लड़की की भांति ही सच्चा एवं बड़ा है। वह जीवन में अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयासरत है।
यह कहानी है अपर्णा की। अपर्णा एक मध्यवर्गीय लड़की है, जो 'राष्ट्रीयकृत बैंक' में काम करती है बैंक में काम करने से पहले उसकी नियुक्ति 'विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज' में हुई थी लेकिन उसने नौकरी छोड़ कर बैंक में काम मुनसीब समझी।वह अपना काम पूरी मेहनत से ईमानदारी से करती है। उसने स्वयं ही कहा है- "जब सिर पर जिम्मेदारी पड़ती है तो ईश्वर अपने आप शक्ति देता है।
मासूम अपर्ना बैंक के माहौल से परिचित न थी। एक दिन जब खन्ना साहब उससे उसके शाम को कार्यक्रम के बारे में पूछते हैं तो अपर्णा बहाना बना देती है। यह क्रम दिन प्रतिदिन चलता रहता है।
अपर्णा अपने माता-पिता के साथ पूरी जाने का कार्यक्रम बनाती है, जिसके लिए वह दस दिन की छुट्टी भी लेती है लेकिन पिता के अस्वस्थता के कारण उनकी योजना टूट जाती है। इसी का फायदा खन्ना साहब लेते हैं और उस पर एक झूठे आरोप लगाते हैं कि उसने बैंक के साथ धोखाधड़ी की है और यहीं से शुरू होता है अपर्ना का संकट। फिर वह अपने ऊपर लगे आरोपों को गलत साबित करने के लिए एवं अपना स्पष्टीकरण देने के लिए अनगिनत दफ्तरों का चक्कर लगाती है लेकिन उसका कोई फायेदा नहीं होता। सक्सेना साहब मिलने के उपरांत एक उम्मीद तो जगी थी लेकिन अब अपर्णा फाइलों को उठाते उठाते वह बेजान हो गई थी। उसका सारा शरीर नीरस बनता जा रहा था। अठारह सौ की अभी अठारह हजार की बन चुकी थी। अपर्णा अपनी आत्मविश्वास कही खो चुकी थी। जाँच अधिकारी क्रमशः अपर्णा को सांत्वना दे रहे थे कि उसकी जांच जल्दी ही खत्म हो जाएगी और उसे ऐसी जगह पर ट्रांसफर कर दिया जाएगा जहां पर वह अपना जीवन ने सिरे से शुरू कर पाएगी। परंतु अपर्णा को संदेह था की अपने दमन पर लगे दाग को का वह कभी भी मिटा पाएगी।

शब्दार्थ

नियुक्ति- चुनाव, आकृष्ट- आकर्षित, ड्यूटी का टर्नओवर- आ जाना, इम्तिहान- परीक्षा, विरले- कोई, पलक झपकते- क्षण भर में, करिश्मे- आश्चर्य, अधिकारी- अफसर, अंदाज़- अनुमान, मुस्तैद- उपस्थित, कुंठा- कमजोरी, दूर दृष्टि- दूरदर्शिता, ग्लानि- पश्चताप, मनयोग- तल्लीनता, अपरिपक्व- कच्चा, कनिष्ठ- छोटा, वरिष्ठ- बड़ा, अभियुक्त- गुनाहगार, ढाढस बंधाते- धीरज देते।

लघु प्रश्न

१) बनारस कौन गया हुआ था?
सिंहा जी का बेटा बनारस गया हुआ था?

२) अपर्णा अपने माता पिता के साथ कहाँ जा रही थी?
उ: अपर्णा अपने माता पिता के साथ जगन्नाथ पुरी जा रही थी।

३) अपर्णा ने बैंक से कितने दिन की छुट्टी ली थी?
उ: अपर्णा ने बैंक से दास दिनों की छुट्टी ली थी।

४) क्षेत्रीय कार्यालय कहाँ था?
उ: क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर में था।

५) गेस्ट हाउस में कौन रुका था?
उ: गेस्ट हाउस में प्रीतम सिंह रुका था।

Teacher's Name - Riya Saha